RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 3 & 4, Vol. : 5,
July-December (2018), Joint Edition, Pages : 34 - 37
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

कुमाँऊ में वैष्णव अवतारवाद व रामभक्ति शाखा से सम्बद्ध

चन्द्रकान्ता आर्या

शोध छात्रा, इतिहास विभाग, एम0 बी0 राजकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल

Received : 14/09/2018 *1st BPR* : 20/09/2018 *2nd BPR* : 03/10/2018 *Accepted* : 10/10/2018

ABSTRACT

बद्रीनाथ के अतिरिक्त आदि बद्री, भविष्य बद्री, वृद्ध बद्री, देव प्रयाग का रघुनाथ मंदिर, उत्तरकाशी में परशुराम एवं विश्वनाथ मंदिर, बागेश्वर का वेणीमाधव मंदिर आदि प्रमुख वैष्णव मंदिर उत्तराखण्ड में स्थित है। कुमाँऊ में शैव सम्प्रदाय के साथ–साथ वैष्णव सम्प्रदाय भी एक प्रसिद्व सम्प्रदाय था। भगवान विष्णु के तीन क्रम का सम्बन्ध जगत् के तीन लोकों पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा आकाश से है। मनुष्य उनके दो पदों को देख सकता हैं परन्तु तृतीय पद उसकी दृष्टि से बाहर है। पौराणिक भक्तिमूलक धर्मो में वैष्णव धर्म अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसा आस्तिक धर्म है, जिसमें विष्णु ही परम आराध्य है। वैष्णव धर्म में विष्णु की महत्ता तथा सर्वश्रेष्ठता प्रतिपादित की गई हैं। विष्णु के दस अवतार माने गये है। मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, रामवतार, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि आदि। वैष्णव धर्म में परम उपास्य वासुदेव को केन्द्र मानकर भागवत धर्म अथवा वैष्णव धर्म विकसित हुआ।

कुमाँऊ में वर्तमान काल में अनेक धर्मो को मानने वाले लोग निवास करते हैं। यहाँ प्रचलित प्रमुख धर्म हिन्दू, मुसलमान, बौद्व, ईसाई, सिक्ख हैं। यहाँ निवास करने वाली अधिकांश जनता हिन्दू धर्म को मानती है। कुमाँऊ में प्रचलित सबसे महत्वपूर्ण हिन्दू सम्प्रदाय वैष्णव सम्प्रदाय है। यहाँ पर वैष्णव मंदिरों की संख्या शैव मंदिरों की अपेक्षा कम है। उत्तराखण्ड़ में बद्रीनाथ जैसा विख्यात वैष्णव मंदिर है जिसकी ख्याति सम्पूर्ण भारतवर्ष में है।[1]

बद्रीनाथ के अतिरिक्त आदि बद्री, भविष्य बद्री, वृद्ध बद्री, देव प्रयाग का रघुनाथ मंदिर, उत्तरकाशी में परशुराम एवं विश्वनाथ मंदिर, बागेश्वर का वेणीमाधव मंदिर आदि प्रमुख वैष्णव मंदिर उत्तराखण्ड में स्थित है। कुमाँऊ में शैव सम्प्रदाय के साथ–साथ वैष्णव सम्प्रदाय भी एक प्रसिद्व सम्प्रदाय था। कत्यूरी कालीन अनेक शासकों ने वैष्णव मंदिरों की स्थापना की तथा मंदिरों को अग्रहार भूमिदान में दी। कत्यूरी वंश के संस्थापक वसन्तन देव द्वारा नृसिंह मंदिर को निर्माण किया गया तथा वैष्णवों को शरणेश्वर नामक ग्राम दान में दिया गया। चंद राजा ज्ञान चंद ने कत्यूर घाटी में एक बद्रीनाथ मंदिर की स्थापना की।इससे यह ज्ञात होता है कि चंद काल में वैष्णवों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था तथा प्रजा में वैष्णव सम्प्रदाय का अच्छा प्रभाव था। पंवार वंश के राजाओं में भी वैष्णव सम्प्रदाय को प्रोत्साहन दिया तथा वैष्णव मंदिरों को भूमि दान में दी।[2]

कुमाँऊ का सम्बन्ध; वैष्णव धर्म से, वैष्णव मतानुयायी दक्षिणात्य ब्राह्मणों का आगमन चन्दों के शासन काल में हुआ। इन्ही की प्रेरणा से यहाँ पर कतिपय वैष्णव मंदिरों का निर्माण कराया गया था। इन्हीं ब्राह्मणों को इनका पुजारी भी नियुक्ति किया गया था। कुमाँऊ के पूर्वी एवं पूर्वोत्तरी क्षेत्रों में प्राप्त मध्यकालीन वैष्णव देवालयों व विष्णु की मूर्तियों से तथा चन्दों की स्थानान्तरित राजधानी अल्मोड़ा में स्थापित विष्णु से सम्बद्व देवालयों से भी होती है। भगवान विष्णु तथा उनके अन्यतम श्रीराम से सम्बद्व देवालयों की उपुर्यक्त सूचियों तथा उनकी पूजा अर्चना की लोकप्रियता को देखते हुए स्पष्ट है कि उत्तराखण्ड में वैष्णव सम्प्रदाय का प्रभाव कुमाँऊ मंडल की अपेक्षा गढ़वाल मंडल पर अधिक रहा।[3]

कुमाँऊ में विष्णु के विभिन्न अवतारों से सम्बद्व देवालय

विष्णु के 24 अवतारों में अन्य अंशावतारों में से ये अवतार,जिनकी सत्ता उत्तराखण्ड में पायी जाती है वे हैं–परशुराम तथा दतात्रेय को समर्पित देवालय देवलगढ़ में पाया जाता है।[4] इनको समर्पित देवालयों के अलावा अन्य देवालयों में भी पार्श्वदेवताओं के रूप में इनकी स्थिति पायी जाती है। जोशीमठ के वासुदेव मंदिर को यहाँ का प्राचीनतम वैष्णव मंदिर माना जाता है। विष्णु के वामनावतार का एकमात्र अंकन इस रूप में काशीपुर से प्राप्त मूर्ति में दिखता हैं। अवतारवाद एक आधारभूत वैष्णवीय सिद्धान्त है, जो भगवत नारायण के नायक देवता वासुदेव कृष्ण के साथ एकीकरण से विकसित हुआ प्रतीत होता हैं। इस एकीकरण के

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 34-37, ISSN 2348 – 3318

चन्द्रकान्ता आर्या

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

फलस्वरूप कृष्ण नारायण के अवतार माने जाते थे। ऋग्वेद में विष्णु ने अनेक अवतार धारण किये। भगवद्गीता, जिसमें इस सिद्वान्त का प्राथमिक विवेचन है,जिसमें स्पष्ट है कि भगवान दृष्टजनों के नाश तथा साधुजनों का उद्वार करते है।

लोकप्रिय देवताओं में जैसे वराह, नृसिंह, वासुदेव कृष्ण, आदि को एक ही भगवान के विभिन्न जन्मों के रूप में मान्यता देकर उन्हें एक साथ समाविष्ट कर दिया जाए। शतपथ ब्राह्माण में वराह का उल्लेख है, जिसने प्रलयपयोधि जल से पुथ्वी को ऊपर उठाया था। और उस वराह को वहाँ प्रजापति ब्रह्मा का ही रूप बताया गया है। नरसिंह को मूलतः अलग देवता माना जाता था। जिसकी कल्पना दैवी शक्ति मूर्ति के रूप में की गई थी। नरसिंह मिथक का बीजरूप एक सिंह देवता की पूजा में विद्यमान था।[5] नरसिंह भगवान विनायकों की ही तरह भयावह देवता रहा होगा, जिसके क्रोध को शमित रखने के लिए उसे प्रसन्न रखना आवश्यक था। रोगों के उपचार के लिए और विपतियों के आगमन को रोकने के लिए नरसिंह स्त्रोत एवं नरसिंह मंत्र को प्रभावकारी बताया गया है। नरसिंह की पूजा ईसवी सन् की प्रारंभिक सदियों के दौरान काफी लोकप्रिय थी।[6]

विष्णु का वामन अवतार ऋग्वेद में वर्णित विष्णु के तीन कदमों के वृतान्त का तथा कुछ लोकप्रिय कथाओं का वर्णन हुआ है। बलि नामक दैत्य राजा ने संपूर्ण संसार को जीत लिया और देवताओं को भयभीत कर दिया। भगवान विष्णु ने वामन का रूप धारण कर उससे दान के रूप धारण कर उससे दान के रूप में तीन कदम पृथ्वी की याचना की। राजा बलि यह बात मान गया और तब विष्णु ने अपना विराट रूप धारण कर तीन ही कदमों में संपूर्ण संसार नाप लिया और उस दैत्य को पाताललोक भेज दिया। स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ अभिलेख विष्णु के वामन अवतार की स्तुति से प्रारंम्भ होता है।

महाभारत में विख्यात अवतार परशुराम भी है। वे एक महान वीर पुरूष के रूप में चित्रित हैं, जिन्होंने पूरे इक्कीस बार क्षत्रियों का संहार किया। जमदग्नि नामक ब्राह्माण के पुत्र के रूप में भगवान् विष्णु ने परशुरामवतार लिया। रामावतार में उनका गर्व चूर्ण हुआ और वे वन में तपस्या के लिए चले गये। मथुरा के राजा कंस के अत्याचारों से प्रजा की रक्षा करने के लिए वसुदेव तथा देवकी के पुत्र रूप में भगवान् विष्णु का कृष्णावतार हुआ। कृष्ण जो राम के ही समान लोकप्रिय है। उन्होंने अनेक अलौकिक चमत्कार दिखाये तथा कंस, जरासंध, शिशुपाल आदि का वध किया।[7]

कुमाँऊ मंडल से प्राप्त प्रमुख वैष्णव देवालय और प्रतिमायें भी अधिक संख्या में हैं। जो इस प्रकार है–लक्ष्मी मंदिर अल्मोडा खास, बैजनाथ, नारायणकाली, मुरली मनोहर अल्मोडा खास, सत्यनारायण मंदिर अल्मोडा खास, वेणीमाधव मंदिर बागेश्वर, मूलनारायण मंदिर पुंगराऊ, लक्ष्मी मंदिर त्रिनेत्रेश्वर–लमगड़ा, विष्णु मंदिर खूंट–महारूद्रेश्वर, बद्रीनाथ मंदिर द्वाराहाट, नारायण मंदिर कासनी–पिथौरागढ़, लक्ष्मीनारायणा मंदिर पिथौरागढ़, नारायण मंदिर दयाल, कर्कोट, सालम, विष्णु मंदिर गंगोलीहाट, बद्रीनाथ के आठ मंदिर है चार कुमाँऊ में और चार गढ़वाल में हैं।[8]

पार्श्वदेवता के रूप में विष्णु की प्रतिमाएं व दशावतार पट्ट निम्नलिखित हैं। चतुर्भज विष्णु प्रतिमाएँ यहाँ अवस्थित हैं– बागनाथ बागेश्वर, चंडिका मंदिर पातालभुवनेश्वर, बालेश्वर मंदिर चम्पावत, पावनेश्वर मंदिर पभाऊ, बयाला मंदिर पिथौरागढ़। शेषशायी विष्णु प्रतिमायें इस प्रकार हैं–त्रिनेत्रेश्वर मंदिर बमन–सुयाल, बागनाथ मंदिर बागेश्वर, विष्णु राममंदिर गंगोलीहाट, कपीना मुहल्ला नौला अल्मोड़ा, हरद्यौ मंदिर पिथौरागढ़, के प्रांगण परिसर में भी एक शेषशायी नारायणमूर्ति थी। लक्ष्मीनारायण प्रतिमाऐं इस प्रकार हैं–त्रिनेत्रेश्वर मंदिर बमन–सुयाल, हरद्यौ मंदिर पिथौरागढ़, के परिसर में एक वृक्ष के नीचे लक्ष्मीनारायण की 2 फीट ऊँची मूर्ति है।[9]

दशावतार में यहाँ के प्रमुख देवालयों में एकल मूर्तियों के अतिरिक्त विष्णु के दशावतारों के निदर्शक दशावतार पट्ट भी पाये जाते है। इनमें से कासिनी के देवालय में स्थित दशावतार मूर्ति को उत्तराखण्ड की सर्वोत्कृष्ट प्रतिमा माना है। कुमाँऊ में भी देवालयों के अतिरिक्त जल वापियों नौलों में भी जल देवता के रूप में विष्णु की प्रतिमाएँ देखी जाती हैं। भगवान् विष्णु के कूर्मावतार से सम्बद्व माने जाने के कारण ये प्रतिमाएँ कुमाँऊ के पूर्वी क्षेत्रों में अधिक पायी जाती हैं। इसमें ये कतिपय उल्लेखनीय हैं–चौसाला का नौला लोहाद्याट कानीकोट का नौला देवीधूरा मनमांडेगाँव का नौला, डूगरासेठी का नागनौला चम्पावत एकहथिया नौला चम्पावत ,कपीना नौला अल्मोड़ा आदि में हैं।[10]

इन नौलों पर स्थापित प्रतिमाओं में विष्णु को या तो चतुर्भुजी स्थानक मुद्रा में अथवा शेषशायी मुद्रा में स्थापित हरित प्रस्तर निर्मित शेषशायी प्रतिमा में भगवान् विष्णु को दांयी से बांयी ओर लेटे हुए, सिर के नीचे रखे हुए हाथ में पद्य तथा अन्य हाथों में शंख,चक्र,एवं गदा को दिखाया गया हैं। साथ में किरीट–मुकुट,कर्ण–कुंडल एकावली,ग्रेवेयक,बाजूबन्द,कंकण,मेखला,कटिसूत्र और वनमाला से अलंकृत दिखाया गया है। इनका बांया पैर द्युटने से मुड़ा तथा दांया लक्ष्मी के अंक में शोभित है। नाभिकमल पर कूर्चधारी द्विमुखी ब्रह्मा का अंकन किया गया है। मस्तक पर शेशनाग के फणों का फैलाव हैं। विष्णु को एक विशिष्ट शक्ति के रूप में माना जाने का इतिहास बहुत पुराना हैं। ऋग्वेद में विष्णु के प्रशस्ति से सम्बन्धित पाँच सूक्त हैं। विष्णु के रूपों का स्पष्ट विकास महाभारत में दिखायी देने लगता है। महाभारत का प्रारम्भ ही नर –नारायण के स्मरण से होता है।[11] वैष्णव सम्प्रदाय जिसे कहा जाता है कि स्थिति भी जाना जाता है,तथा जिसके उपास्यदेव को वासुदेव कहा जाता है, कि स्थिति भी अति प्राचीन काल से मिलने लगती है। तैतिरीय आख्यक में नारायण एवं वासुदेव में विष्णु की एकता को प्रस्तुत करने वाली 'विष्णुगायत्री'में उसकी स्तुति इस प्रकार की जाती है–''नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।।

विष्णु वासुदेव की षोंडशोपचार पूजा का प्रारम्भिक रूप हमें सर्वप्रथम विष्णुधर्मसूत्र में देखने को मिलता है। ईसा से छःसौ वर्ष पूर्व के तथा द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व के आस–पास के अनेक ग्रंथों एवं अभिलेखों में विष्णु तथा उनके अवतारों से सम्बद्ध अनेक संदर्भो का उल्लेख पाया जाता हैं।[12] वासुदेव की आराधना के रूप में वैष्णव सम्प्रदाय का सर्वप्रथम साहित्यक सन्दर्भ पाणिनि के एक सूत्र ''वासुदेवार्जुनाभ्यां वुंज'' में पाया जाता है। जिसमें वुंज प्रत्यय के योग से ''वासुदेव की आराधना के रूप में वैष्णव सम्प्रदाय का सर्वप्रथम साहित्यक सन्दर्भ पाणिनि के एक सूत्र ''वासुदेवार्जुनाभ्यां वुंज'' में पाया जाता है। जिसमें वुजं प्रत्यय के योग से ''वासुदेव भक्तिरस्य वासुदेवक ''पद की सिद्दि की गयी हैं। मथुरा शिलालेख में कहा गया है कि वसु नामक व्यक्ति ने 'महास्थान 'में भगवान वासुदेव के एक चतु:शाल मंदिर, तोरण और वेदिका की स्थापना की थी। इसके अतिरिक्त 200 ई0पू0 के वेसनगर के शिलालेख के अनुसार यवन शासक हेलियोडोरस के द्वारा देवाधिदेव वासुदेव की प्रतिष्ठा एवं प्रसार था कि विदेशी–विधर्मी भी इसकी ओर आकृष्ट हो रहे थें। भागवत सम्प्रदाय के अर्न्तगत भक्ति तथा उपासना को ज्ञान एवं योग की अपेक्षा अधिक महत्व दिया गया है। कालान्तर में वैष्णव परम्परा के अनुयायी आचार्यो की अपनी–अपनी विचारधाराओं के प्रभावान्तर्गत इसमें कई उपसम्प्रदाय अस्तित्व में आ गये थें। [13]

वराह पुराण में हमें 10 अवतारों का उल्लेख मिलता हैं। जिनमें से ऊपर उल्लेखित 6 अवतारों के अलावा मत्स्य, कूर्म, बुद्ध और कल्कि आते हैं जिन्हें आगे चलकर स्वीकार कर लिया गया। प्राचीनकाल से ही भारत के सभी क्षेत्रों में यह सम्प्रदाय किसी न किसी रूप में प्रभावशाली रहा हैं। वैष्णव साधना तीन नामों से प्रचलित है। नारायण धर्म, वासुदेव धर्म, भागवत धर्म,. ऋग्वेद विष्णु को प्रकाश और हैं। आगे चलकर महाकाव्य एवं पुराणों के समय विष्णु त्रिविक्रम वाम का अनिवार्य सम्बन्ध है। कहा जाता है कि विष्णु भगवान ने अपने तीन पगों द्वारा तीन लोकों को मापा था।[14]

''इन्द्र विष्णु विच्रकमे त्रेता निदये पदम।
मूढ़मस्य पांसुरे।''

भगवान विष्णु के तीन क्रम का सम्बन्ध जगत् के तीन लोकों पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा आकाश से है। मनुष्य उनके दो पदों को देख सकता हैं परन्तु तृतीय पद उसकी दृष्टि से बाहर है। पौराणिक भक्तिमूलक धर्मो में वैष्णव धर्म अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसा आस्तिक धर्म है, जिसमें विष्णु ही परम आराध्य है। वैष्णव धर्म में विष्णु की महत्ता तथा सर्वश्रेष्ठता प्रतिपादित की गई हैं। इस धर्म के जाना जाता हैं। जिस परम उपास्य वासुदेव को केन्द्र मानकर भागवत धर्म अथवा धर्म विकसित हुआ। भागवत धर्म का पर्याप्त प्रचार हो चुका था।[15]

वैष्णव धर्म भारत के पश्चिोत्तर भाग में फैल चुका था। वैष्णव धर्म का सर्वाधिक उन्नयन गुप्त युग में हुआ था। गुप्तवंशीय राजा स्वंय को 'परम भागवत' कहते थे। गुप्तकालीन विभिन्न शिलालेखों, मूर्तियों, ताम्रपत्र अभिलेखों आदि में वैष्णव धर्म का विस्तृत वर्णन किया गया हैं। विष्णु एक वैदिक देव है। उनके विद्वानों ने ऋग्वेद में विष्णु के स्वरूप को सूर्य के रूप में स्वीकार किया। शतपथ ब्राह्मण से ही वामन विष्णु की कथा भी प्राप्त होती हैं जिसमें विष्णु को अद्भुत शक्ति से सम्पन्न कर दिया गया हैं। आरण्यक तथा उपनिषद्काल में विष्णु का महत्व और अधिक बढ़ा।[16] मैत्री उपनिषद् में अन्न को, जगत के धारक विष्णु का स्वरूप कहा गया है। वेदों तथा ब्राहाण ग्रंथों में विष्णु के जिन तीन विशाल पदों का वर्णन था। उनके साथ अनेकानेक कथाएँ जुड़ने लगी।

अवतारवाद

अवतारवाद की परिकल्पना भी वैष्णव धर्म का एक और मूलभूत तत्व है। यह सिद्वान्त सम्भवतः भागवत वासुदेव नारायण के साथ वासुदेव कृष्ण का तादाम्य कर दिए जाने के कारण प्रचलित हुआ और अत्यन्त शीध्रता पूर्वक बौद्धधर्म में भी ग्रहण कर लिया गया। महाभारत के नाराणीय खण्ड नारायण या विष्णु के अवतारों का उल्लेख हैं। विष्णु के दस अवतार माने गये है। मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, रामवतार, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि आदि। भक्ति, अहिंसा, अवतारवाद आदि मुख्य सिद्धान्तों को ग्रहण करके विकसित हुए। वैष्णव धर्म के चरम उपास्य विष्णु नारायण, वासुदेव कृष्ण थे। किन्तु अवतारवाद की परिकल्पना में इक्ष्वाकुवंशी राम भी विष्णु के अवतार रूप में पृथ्वी पर आये।[17] वाल्मीकि रामायण के मध्यवर्ती पाँच काण्डों में राम एक महापुरूष हैं। और प्रथम तथा अन्तिम काण्ड में वे विष्णु के अवतार रूप में दिखाई देते हैं। वर्तमान युग में वैश्णव धर्म के अन्तर्गत राम की उपासना भी पर्याप्त क्षेत्र में फैली हुई है।

संदर्भ

1– शर्मा,डी0डी0, 2015,उतराखण्ड का सामाजिक एवं सांप्रदायिक इतिहास, अंकित प्रकाशन, पीली कोठी, हल्द्वानी नैनीताल, पृ0स0 500–504
2– विद्यालंकार,सत्यकेतु, 2007, प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन प्रकाशन श्री सरस्वती सदन पृ0स0 93–96
3– जायसवाल,सुवीरा–1996,वैश्णव धर्म का उद्भव और विकास ,श्याम बिहारी राय ग्रंथ शिल्पी पृ0स0 15–25

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 34-37, ISSN 2348 – 3318

4— गोयल ,प्रभा प्रीति—2008,भारतीय संस्कृति,राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर ,राजस्थान पृ0स0 30—35
5— पंवार सिंह भगत—2007,उत्तराखण्ड संग्रहालय दर्शन, ओमेगा पब्लिकेशन, पृ0स0 212—215
6— डबराल, शिवप्रसाद, उतराखण्ड संग्रहालय दर्शन ओमेगा पब्लिकेशन, पृ0स0 25—32
7— उनियाल ,हेमा, 2005, कुमाँऊ के प्रसिद्ध मंदिर तक्षशिला प्रकाशन,नई दिल्ली, पृ0स0 25—33
8— बलूनी,दिनेशचन्द्र, 2001, उतराखण्ड संस्कृति, लोकजीवन, इतिहास पुरातत्व बरेली, पृ0स0 62—67
9— पाण्डे,बद्रीदत्त, 1937, कुमाँऊ का इतिहास, अल्मोड़ा, पृ0स0 86—93
10—राय,कौलेश्वर, 2002, प्राचीन भारत में धर्म किताब महल, सरोजिनी नायडू,इलाहाबाद, पृ0स0 25—29
11—शर्मा,श्याम, 2004, प्राचीन भारतीय कला वास्तुकला एवं मूर्तिकला,रिसर्च पब्लिकेशन्स,जयपुरपृ0स0 42—46